International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

Kori Weavers : A Historical Study

Sharad Chaudhary

Research Scholar, Department of Medieval and Modern History, University of Lucknow.

Abstract

The Kori caste, also referred to as Koli, Kol, Julaha, Mahour, Mahawar, Anuragi, or Kabirpanthi in different regions, is a Scheduled Caste community found predominantly in Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Himachal Pradesh, Haryana, Odisha, Punjab, Rajasthan, Uttarakhand, and the Union Territory of Chandigarh. Traditionally engaged in weaving, the Koris were once known for producing handwoven fabrics, but industrialization and declining demand for manual weaving have pushed many towards agriculture, farm labor, midwifery, and other occupations. They follow an endogamous social structure with various exogamous clans and observe customs such as arranged marriages, widow remarriage, and caste council governance for dispute resolution. According to the 2011 Census, Uttar Pradesh alone has over 2.29 million Koris, yet many still face challenges in obtaining caste certificates, which limit their access to government benefits, educational reservations, and employment opportunities. Despite these socio-economic hurdles, the community has achieved notable representation in politics, with figures such as former President Ram Nath Kovind hailing from the Kori caste, and various political parties actively seeking their support due to their significant population. Today, the Kori community continues to navigate the balance between preserving its cultural identity and advancing socio-economically in a changing India.

कोरी बुनकर : ऐतिहासिक अध्ययन

भारत में जाति व्यवस्था दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सामाजिक स्तरीकरण प्रणालियों में से एक है, जिसकी उत्पत्ति लगभग 3,000 वर्ष पूर्व मानी जाती है। इसका आधार प्राचीन हिंदू वर्ण व्यवस्था में है, जिसमें समाज को चार प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया था—ब्राह्मण (पुरोहित और विद्वान), क्षत्रिय (योद्धा और शासक), वैश्य (व्यापारी और कृषक), और शूद्र (मजदूर और सेवा प्रदाता)। समय के साथ यह व्यवस्था विकसित होकर हजारों वंशानुगत समूहों के जटिल व्यवस्था में बदल गई, जिन्हें 'जाति' कहा जाता है। प्रारंभ में यह व्यवस्था व्यवसायिक विशेषज्ञता और धार्मिक कर्तव्यों से जुड़ी थी, लेकिन धीरे-धीरे यह एक कठोर सामाजिक पदानुक्रम बन गई, जो जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू—जैसे विवाह, भोजन की आदतें, व्यावसायिक पहचान और संसाधनों की उपलब्धता—को नियंत्रित करने लगी। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने, विशेष रूप से जनगणना और कानूनी ढाँचे में इसके संहिताकरण के माध्यम से, जातिगत विभाजनों को संस्थागत रूप दिया। इसी व्यवस्था में 'कोरी जाति' को दलित वर्गों में स्थान दिया है , जिन्हें उनकी परम्परागत व्यावसायिक पहचान के कारण 'हिंदू बुनकर' या 'कोरी बुनकर' के नाम से भी जाना जाता है । प्रस्तुत लेख का उद्देश्य कोरी समाज का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त अध्ययन करना है जिससे पाठकों में कोरी समाज के प्रति एक मौलिक समझ विकसित हो सके ।

जातिगत विभिन्नता भारतीय समाज में सदैव ही विद्यमान रही हैं। जिसमें कुछ अछूत जातियों का भी उल्लेख मिलता है, 'कोरी' जाति इनमें से एक है। इस जाति के अन्य नामों में 'कमल', 'कमलवंशी', 'अहिरवार' और 'शंखवार शामिल हैं। इनका जाति आधारित व्यवसाय बुनाई है। कोरी शब्द 'कोरा' से निकला है जिसका अर्थ है, मोटा कपड़ा। कोरी/कोली विशेष रूप से उत्तर भारत में पाए जाते हैं उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों गोरखपुर, बनारस, आजमगढ़, फैजाबाद, सुल्तानपुर, मिर्जापुर, बाराबंकी, लखनऊ, कानपुर, एटा, मैनपुरी, बुंदेलखंड व मेरठ आदि जिलों में निवास करते हैं। उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में कोरी जाति अनुसूचित जाति में आती है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में कोरी समुदाय की जनसंख्या 22,93,937 [1]थी।

[1] Census of India,2011.

कोरी जाति के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद रहा है, एक मत के अनुसार कोरी विभिन्न जातियों से निष्कासित किए गए लोगों के समूह से बनी एक जाति है, जो अपने व्यवसाय की समानता के कारण एकजुट हो गए। जिनका मुख्य कार्य बुनाई करना था। वही 'नेस्फील्ड' इसे चमार जाति से निकली हुई एक जाति मानते हैं। जिसका मुख्य व्यवसाय मोटे देशी कपड़ों की बुनाई करना है। कोरी स्वयं को कबीर के वंशज मानते हैं। इसकी उपजाति में 'अहिरवार' एक प्रमुख उपजाति है।

भारतीय इतिहास में कोरी जाति प्रथम दृष्टया 1857 के विद्रोह के दौरान भारतीय इतिहास में राजनीतिक पटल पर उभर कर आई। विद्रोह के दौरान झांसी में कोरी जाति के लोगों ने रानी के साथ अंग्रेजों से कई लड़ाईयां लड़ी । कोरी समाज की झलकारी बाई के विषय में कहा जाता है कि वे रानी की हमशक्ल थी और जिस समय जनरल ह्यूरोज की सेना झांसी के किले में प्रवेश करती है उस समय रानी को किले से बाहर निकालने में झलकारी बाई ने मुख्य भूमिका निभाई थी । झलकारी ने रानी के वेश में अंग्रेजी सेना का सामना किया था । बुंदेलखंड के कोरियो के विषय में यह भी कहा जाता है कि वे बुनकर होने के साथ साथ कुशल लट्ठबाज थे । भारत में औद्योगीकरण से पूर्व कोरी बुनकरों की स्थिति आर्थिक रूप से अच्छी प्रतीत होती हैं। औद्योगीकरण के फलस्वरुप उनकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आई तथा यह अन्य व्यवसायों - कृषि, खेत मजदूरी आदि की ओर अग्रसर होते देखे गए। स्वतंत्र भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना की समाप्ति (1956) तक यह पूर्ण रूप से अपना व्यवसाय छोड़ चुके थे ।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें कोरी समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास का कालानुक्रमिक विश्लेषण किया गया है। अनुसंधान के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया, जिनमें ब्रिटिश गजेटियर, जनगणना रिपोर्ट, इतिहासकारों के ग्रंथ, समकालीन शोध कार्य, कबीर पंथ साहित्य और जातीय संगठनों के अभिलेख शामिल हैं। सीमित रूप से प्राथमिक स्रोत के रूप में मौखिक इतिहास और लोककथाओं का सहारा लिया गया है|

इतिहासलेखन (Litreture Review)

कोरी कारीगर बुनकरों की एक बड़ी जाति है, जो उत्तर प्रदेश के एक बड़े हिस्से, मध्य प्रदेश, राजस्थान के कुछ निकटवर्ती जिलों में और इस क्षेत्र से परे मुंबई अहमदाबाद और इंदौर जैसे कुछ औद्योगिक केंद्रों में पाई जाती है (Crooke 1896, R.V Russel 1916) | 1931 में, जब उत्तर प्रदेश में 7,26,000 कोरी थे, वे तथाकथित दलित वर्गों का 6.9% थे (Stefan Molund, 1988), वे जातियां आजकल अनुसूचित जातियों का बड़ा हिस्सा है। 1956 के बाद उन्हें आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अनुसूचित जातियों से संबंधित एक वर्ग और अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित किया गया था।

इस जाति की उत्पति और इतिहास के बारे में सीमित जानकारी है William Crooke ने अपनी पुस्तक 'The Tribes and Castes of the North - Western Provinces and Oudh,' 1896 में अनुमान लगाया कि इस जाति का नाम 'कोल' जाति से लिया गया है, जो आदिवासी मूल की एक निम्न जाति है। जो आजकल मुख्य रूप से हिमालय के पहाड़ी इलाके में पाई जाती थी। क्रुक चमारों की 16 उपजातियां बताते हैं जिनमें कोरी भी एक उपजाति है। क्रुक के अनुसार कोरी फैजाबाद और गोरखपुर डिविजन में पाये जाते थे जो मोटे कपड़े सिलने का काम करते थे तथा वे जूते भी बनाते थे। फिर भी ना तो Crooke और ना ही किसी अन्य नृवंश वैज्ञानिक ने सुझाव दिया है कि समकालीन कोरी प्राचीन कोल के शुद्ध वंशज हैं। इसके विपरीत, अधिकांश प्रारंभिक नृवंश वैज्ञानिक जो जातियों की उत्पत्ति के बारे में अटकलें लगाते थे बेन्स (1912), इबट्सन (1916), जी. ब्रिग्स (1920) शामिल थे, बताते हैं की कोरियों का एक बड़ा हिस्सा चमारों से उत्पन्न हुआ है, जो उत्तर भारत में चमड़े का काम करने वाली एक अछूत जाति है। इस सिद्धांत के समर्थन में उन्होंने दोनों जातियों के मध्य रीति रिवाज और शिष्टाचारों की समानता का वर्णन किया। कुछ कोरी उपजातियों के नाम कुछ चमार उपजातियों के समान हैं। चमार जो बुनाई का अभ्यास करते थे, कोरी बनने की प्रक्रिया के बीच में प्रतीत होते थे।

N 'Geo. W.Briggs' अपनी पुस्तक 'द रिलीजियस लाइफ ऑफ़ इंडिया' 'द चमार' (The Religious life of India, The Chamars, 1920) में चमार जाति के सामाजिक, आर्थिक व उनके धार्मिक विश्वासों का वर्णन देते हैं, वे बताते हैं, कि जो लोग चमड़े के कारीगर, चमड़े का जाल एवं वस्तुएं इत्यादि तैयार करते हैं, उन्हें उत्तर भारत में एक सामान्य शब्द 'चमार' के नाम से जाना जाता है। प्राचीन भारत में चर्मकार और चमड़े का काम करने वाले व्यवसायी समृद्ध व पूर्ण विकसित थे। Briggs अपने विवरण में कोरी जाति का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि, कोरी/कोली चमार विशेष रूप से गोरखपुर और लखनऊ डिविजनों में पाए जाते हैं। कोरी एक जूता निर्माता एक खेत मजदूर और एक बुनकर हैं। इन्हें चमार जुलाहा चमार बुनकर भी कहा जाता है। वे बताते हैं, कि कोरी और कोरी चमार एक साथ भोजन तो करते हैं, परंतु अंतर विवाह नहीं करते हैं। यह समुदाय जमीदारों के ऋण से सदैव दबे रहते हैं जिनके एवज में उनकी महिलाओं पर जमींदारों का अवैध अधिकार रहता था। Briggs चमार और कोरी जाति को अलग-अलग देखते हैं।

Harold.A.Gould अपने लेख "A Jajmani System of North India: Its Structure, Magnitude and Meaning" published by University of Pitsburgh (1964) में उत्तर भारत में प्रचलित जजमानी प्रणाली की जांच करते हैं, उनका अध्ययन मुख्य रूप से शेरपुर जिला (फैजाबाद) पर हैं। वे बताते हैं, यहां कोरी जाति के 19 परिवार थे। जजमानी प्रणाली एक पारंपरिक, आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था है, जहां विशिष्ट व्यावसायिक समूह, अक्सर निचली जातियां, उच्च जाति के भूमि मालिकों संरक्षको को जीविका, सुरक्षा और अन्य लाभों के बदले में विभिन्न सामान और सेवाएं प्रदान करती थी जैसे; बर्तन, बढ़ई, लोहार, बुनकर आदि। वे बताते हैं की उत्तर भारत में जजमानी प्रणाली बहुत व्यापक है, वह विभिन्न क्षेत्रों में इसके अलग-अलग प्रभाव हैं। कोरी समुदाय का विवरण करते हुए बताते हैं, कि यह बुनकर जाति है, लेकिन समकालीन व्यवस्था में इसका कोई भी सदस्य पेशे को नहीं अपनाता क्योंकि औद्योगिकरण ने उन्हें निष्क्रिय कर दिया है। वे बताते हैं कि कोरी जाति स्वयं को चमार से अलग मानते हैं। वे जजमानी प्रथा का सामाजिक संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का भी वर्णन करते हैं।

First We are People:- Koris of Kanpur between Caste and Class (1988) में Stefan Moulund के द्वारा कानपुर के कोरी समुदाय पर लिखी गई पुस्तक है यह पुस्तक 1974 से 1976 के दौरान किए गए अपने फील्ड वर्क के आधार पर लिखी गई हैं। वे बताते हैं, की कोरी एक बुनकर समुदाय है जो उत्तर प्रदेश की अनुसूचित जाति से आता है कानपुर में यह जाति 1880-90 के दशकों में उद्योगीकरण के कारण जीविका की खोज में आकर बसी ।

कोरी परंपरागत रूप से कारीगर बुनकर रहे हैं, जो मुख्यतः रोज़मर्रा के उपयोग के लिए मोटा कपड़ा बुनते थे। उत्तर प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में इन्हें अनुसूचित जाति में गिना जाता है, स्थानीय समाज में इन्हें चमार से थोड़ा ऊँचा स्थान दिया जाता है, लेकिन "कोरी-चमार" जैसे अपमानजनक शब्द से दोनों को एक ही श्रेणी में रखा जाता है। कुछ कोरी स्वयं को कोलियों का वंशज मानते हैं, जो भगवान बुद्ध के मातृ पक्ष से जुड़ी शाही वंशावली मानी जाती है, हालांकि कानपुर क्षेत्र में यह धारणा कम पाई जाती है।

आर्थिक दृष्टि से कोरी जाति का मुख्य कार्य पारंपरिक रूप से मोटा कपड़ा बुनना रहा, जो स्थानीय उपभोग के लिए बनाया जाता था। औपनिवेशिक काल में भारत का बुनाई उद्योग, विशेषकर मुस्लिम जुलाहों का उच्च गुणवत्ता वाला कपड़ा उद्योग, मशीन से बने कपड़ों और विदेशी आयात के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ। कोरी, जो मोटे कपड़े के उत्पादन क्षेत्र में कार्यरत थे, पर इसका असर अपेक्षाकृत धीरे-धीरे पड़ा, लेकिन जैसे-जैसे मशीन से सूत कातने और कपड़ा बनाने का काम मिलों में केंद्रित होता गया, उनकी आजीविका भी प्रभावित हुई। 19वीं सदी के अंत से लेकर आगे, बड़ी संख्या में कोरी ग्रामीण बुंदेलखंड और अन्य क्षेत्रों से कानपुर की कपड़ा मिलों में काम करने के लिए आए। 1970 के दशक में कानपुर की कुल जनसंख्या में कोरी लगभग 3 प्रतिशत थे, जिनकी संख्या लगभग 35 से 45 हज़ार के बीच थी। आज के समय में, पारंपरिक बुनाई से हटकर, कोरी विभिन्न व्यवसायों में लग गए हैं — जैसे फ़ैक्टरी मज़दूरी, सिलाई, छोटा व्यापार, निर्माण कार्य, बीड़ी बनाना और कृषि मज़दूरी।

कोरी जाति कई उपजातियों में विभाजित है, जिनमें अहिरवार उपजाति मुख्य है। उपजातियों की अपनी- अपनी अलग बस्तियाँ होती थी, जिनमें से कोरियाना एक बड़ा अहिरवार इलाक़ा था ।सामाजिक दृष्टि से ये जाति क्रम में नीचे मानी जाती है, लेकिन चमार से थोड़ा ऊपर, क्योंकि हिन्दू मान्यताओं में कपास जैसे पौधे-आधारित उत्पाद को "शुद्ध" और पशु-आधारित चमड़े को "अशुद्ध" माना जाता है। विवाह प्रायः जाति और उपजाति के भीतर ही होते हैं; उपजाति से बाहर विवाह दुर्लभ होते हैं, लेकिन असंभव नहीं। अन्य दलित जातियों और मुस्लिमों से इनके संबंध व्यक्ति की शिक्षा, पेशा और दृष्टिकोण पर निर्भर करते हैं।

जाति-आधारित संगठनों के क्षेत्र में, राजस्थान के ऐतिहासिक कोली-राजपूत आंदोलन ने कोरियों का दर्जा ऊँचा उठाने की कोशिश की। कानपुर में संयुक्त कोरी महासभा ने सभी उपजातियों को एकजुट करने का प्रयास किया, लेकिन आंतरिक विभाजन के कारण यह सफल नहीं हो पाई। 'अहिरवार कोरी संघ' ने उपजाति-स्तर पर सामाजिक सुधार के प्रयास किए, जिन्हें सीमित सफलता मिली

"भारत की सामाजिक संरचना की मौलिक और मुख्य विशेषता इसकी जाति व्यवस्था है"- "बद्री नारायण" अपनी पुस्तक Women Heros And Dalit Assertion In North India, Culture, Identity And Politics, 2006 में दलितों के बदलते राजनीतिक व सामाजिक आयाम की चर्चा करते हैं। वे दर्शाते हैं, की किस प्रकार कांशीराम और मायावती ने मिलकर उत्तर भारत में दलितों को एक नई पहचान दी बद्रीनारायण दलित नेताओं का भारतीय इतिहास में योगदान बताते हैं, साथ ही यह आरोप लगाते हैं, कि उच्च वर्ग के द्वारा लिखित इतिहास में दलित नेताओं की उपेक्षा की गई तथा जिस समय ऊंची जातियाँ राय बहादुर की उपाधियाँ हासिल करने की होड में थी उस समय दलित नेता अपने पूर्वजों की जमीनें बचाने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे थे। इसका उदाहरण वे 1857 के विद्रोह पर हुए लेखन में देते हैं। वे बताते हैं की किस प्रकार मातादीन भंगी और झलकारी बाई के योगदान को नकारा गया है। वे अपने विवरण में बुंदेलखंड की कोरी जाति का वर्णन देते हैं।जहां झलकारी बाई की कथा प्रसिद्ध है। वे बताते हैं, कि राजनीति में दलितों को मुख्य धारा में लाने के लिए

चेहरे की राजनीति का प्रयोग किया जाने लगा। इसी प्रकार कोरी जाति भी झलकारी बाई की कहानी का उपयोग अपने समुदाय के महिमामंडन के लिए करती है। वे बताते हैं, कि बुंदेलखंड में हर तीसरा घर कोरी जाति का है, किंतु आज भी इस क्षेत्र में कोरी जाति को हीन व अछूत दृष्टि से देखा जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय सामाजिक पदानुक्रम में कोरी समाज दलित समूहों का हिस्सा रहा है जिसकी पहचान अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग रही है। मध्य भारत मे कोरी/कोली पूर्व मे अपने को राजपूत समाज से जोड़ते आए हैं वही दूसरी ओर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कोरी कबीर के वंशज माने जाते हैं। कबीर अपने कई दोहों में वर्णन करते हैं –

हरी का नाम अभैपद दाता, कहे कबीरा 'कोरी' [2]

एक स्थान पर कबीर कहते हैं –

कोरी कोरे कलस के, निर्गुन का जया
काया ढके अपनी भव्य सागर हया।

समाजशास्त्रीय इतिहासकार इब्बटसन बताते हैं कि रुहेलखण्ड का पारसोतिया जुलाहा एक हिंदु है और जाहिर तौर पर कोरी का ही एक प्रजाति है | पूर्वी उत्तर प्रदेश में कई स्थानों में यह भी सुनने को मिलता है कि ये चमारों का ही एक समूह है जो हिंदू अस्मिता में अछूत पहचान मिटाने के लिए बुनकरी के पेशे आ गया ,वे मांस खाना छोड़ देते है और चमारों से धीरे धीरे अपने सामाजिक अनुबंध भी तोड़ देते हैं। फिर भी कोरी समाज आज हिंदू अस्मिता द्वारा अछूतों की श्रेणी में रखा जाता है।

पूर्व विदित है कि कोरी जाति प्रथम दृष्टया 1857 के विद्रोह में झलकारी बाई तथा पूरनकोरी के साहसिक संघर्ष के द्वारा ऐतिहासिक पटल पर सामने आयी। मोहनदास नेमीसराय ने गजेटियर के हवाले से अपनी पुस्तक वीरांगना झलकारी बाई में लिखा है कि झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी के बालाजी मार्ग में स्थित भोजला गांव में हुआ था उनके पिता का नाम मूलचंद और माता का नाम धनिया था। 1843 में उनका विवाह नयापुरा झांसी के पुरानकोरी से हुआ था । उस समय झांसी में गंगाधर राव के समय से पहले दलित समाज के जितने भी कारीगर थे , वे झांसी के बाहर रहते थे बाद में राजा के आदेश से शहर के अंदर उनके लिए बस्ती बनाई गई जिसे नयापुरा नाम दिया गया। नैमिशराय इस बात पर भी बाखूबी जोर देते है कि उन दिनों वैसे भी दलित समाज के लोगों को सम्मान न देने की परंपरा थी। इस बात को अंग्रेज अच्छे से जानते थे , इसीलिए अंग्रेज भी वंचितों और दलितों के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे। यही वजह है कि ब्रिटिश दस्तावेजों अथवा लेखन में केवल झलकारी बाई ही नहीं अपितु उन जैसे अनेक वीरांगनाओं का जिक्र गायब हैं।

इस प्रकार यह जाति आगे स्वदेशी आंदोलन में तथा राष्ट्रीय आंदोलन में भी सक्रिय दिखती है और इस दौरान कई अन्य नेता उभरकर सामने आये। मध्य भारत में राघोजीभांगरे, रूपलोकोरी जैसे बड़े नेता औपनिवेशिक भारत में सदैव ब्रितानिया हुकूमत से संघर्ष करते रहे। इसी प्रकार कोरी समाज के गुजराती नेता मोरारभाई पंचाभाई पटेल ,जो उत्तर भारत में ब्रिटिश सरकार के नमक कानून के विरुद्ध सत्याग्राही थे, ने राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख योगदान दिया। विनोबाभावे के सत्याग्रह आंदोलन में बाबादीन कोरी का योगदान महत्वपूर्ण था जिन्होंने निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व किया। राष्ट्रीय आंदोलन में कोरी समाज के एक नेता जिन्होंने सर्वाधिक प्रसिद्धि पाई वे बाबू जगजीवन राम थे। बाबू जगजीवन राम एक प्रभावशाली नेता थे जिन्होंने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई और राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ाई को सामाजिक समानता के संघर्ष से जोड़ा। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान, वे महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं के प्रभाव में आए और छात्र राजनीति में सक्रिय हो गए। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया, कारावास का सामना किया और अखिल भारतीय दलित वर्ग लीग (1935) के माध्यम से दलितों को संगठित करने का काम किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हुई। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, उन्होंने विरोध प्रदर्शनों का आयोजन किया और वरिष्ठ नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भी भूमिगत गतिविधियाँ जारी रखीं, जिसके कारण उन्हें फिर से कारावास हुआ। 1946 में संविधान सभा के सदस्य के रूप में, उन्होंने समानता और अनुसूचित जातियों के उत्थान के लिए प्रावधान तैयार करने में योगदान दिया। अपने प्रयासों से, जगजीवन राम ने राष्ट्रीय आंदोलन को और अधिक समावेशी बनाया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध लड़ते हुए हाशिए के समुदायों को आवाज़ दी।

समाज के दलित वर्ग से आने के कारण कोरियों को समय समय पर सामाजिक वंचनाओ का भी सामना करना पड़ा। समाज का उच्च वर्ग सदैव इन्हें हीनता की दृष्टि से देखता आया है और इन्हें चमारों के संबंधित मानता आया है जिसके कारण औपनिवेशिक लेखनों में इन्हें आपराधिक जातियों के रूप में दिखाया गया है।[3] एक कुप्रथा का जिक्र करते हुए ब्रिग्स अपने विवरण में बताते है कि अछूत जातियों में नवदमपत्ति को समाज मे तब मान्यता मिलती थी जब नववधू गांव के जमींदारों के साथ सहवास करती थी। विलियम क्रुक अपने लेखन में बताते हैं कि मिर्जापुर क्षेत्र में ब्राह्मण कहांर कोरी के हाथों से पानी पी सकते थे लेकिन चमार कोरी के हाथ से पानी पीना पाप माना जाता था। कोरी समाज में आपस में भी कई कुप्रथाएं देखने को मिलती हैं एक कर्मकांड का जिक्र करते हुए क्रुक बताते हैं- कि कोरियों

[2] The Bijak of Kabir.
[3] Rawat,Ram Narayan S,Reconsidering Untouchability,pp 24-28

में यदि किसी महिला ने सिर्फ मादा बच्चों को जन्म दिया हो तो गर्भनाल जैसी संरचना बनाकर एक छोटे मिट्टी के बर्तन में रखा जाता है और उसे ऐसे स्थान पर दफनाया जाता है जहां तीन राहें मिलती हों और यह माना जाता है कि उसके बाद वह स्त्री एक नर बच्चे को जन्म देगी। क्रुक बताते हैं कि कोरी समाज में आपस में कई स्तरों में विभाजन देखने को मिलता है ,फैजाबाद के कोरी स्वयं को रैदासी/शिवनारायणी संप्रदाय का मानते हैं जबकि बिजनौर के कोरी स्वयं को कबीर पंथी बताते है । इन्हीं विभाजनों और कुप्रथाओं को दूर करने के उद्देश्य से कोरियो के कई संगठन भी देखने को मिलते हैं, जिन्होंने राजनीतिक - सामाजिक चेतना के साथ साथ समाज में शैक्षिक चेतना लाने का भी प्रयास किया । 'कोरी सुधार परिषद' 1910 में उत्तर प्रदेश मैनपुरी में बनायी गयी यह सभा दलितों की शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर केंद्रित थी। इसने बाल विवाह, दहेज, शराब पीने और मांस खाने और अन्य असामाजिक कृत्यों को रोकने का प्रयास किया, जिन्हें दलित समाज के विकास में बाधा माना जाता था। उच्च सामाजिक स्थिति के लिए सरनेम के रूप में आर्य, वर्मा, चौधरी का उपयोग करने को कहा जाने लगा । सामाजिक जागृति इस संघ का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गया। इसे दलित समाज के विकास के लिए आवश्यक शर्त माना गया। 1935 में, यह संघ "लखनऊ की कोरी महासभा" में परिवर्तित हो गया तथा यह महासभा 1940 में 'कोरी महासभा' में परिवर्तित हो गई। इस संघ ने शिक्षा, कोरी उप-जातियों के बीच एकता और पंचायत निकाय व विधानसभा चुनावों में प्रतिनिधित्व की माँग की। इस संघ ने पूरे राज्य में शाखाएँ स्थापित कीं। दिलचस्प बात यह है कि यह समुदाय खुद को दलित जातियों की सूची में शामिल नहीं करना चाहता।

ब्रिटिश भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कोरी समुदाय के आर्थिक महत्व को इतिहासकार स्वीकारते आए हैं भले ही वह निम्न स्तर पर रहा हो। राम नारायण रावत भी बताते है कि निम्न वर्ग उत्पादन की निचली श्रृंखला के रूप में अपना योगदान देता आया है । वे कृषि, मजदूर,माली, ड्राइवर, लोहार, व बुनकरी के व्यवसायों में लगे हुए थे जिसे अर्थव्यवस्था (सेवा & उत्पादन) में नजरंदाज नहीं किया जा सकता । औद्योगिकीकरण से पूर्व गांवों जजमानी प्रथा का चलन था जिसमें कोरी समाज के द्वारा मुख्य भूमिका निभाई जाती थी [4]वे बुनाई किए हुए वस्त्रों के द्वारा इसमें योगदान देते थे जो उस समय निम्न वर्गीय परिवारों का प्रमुख परिधान होता था ।औद्योगीकरण के फलस्वरूप कोरी बुनकरों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन देखा गया, 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में अंग्रेजों द्वारा लाई गई नई तकनीकों का प्रभाव पारंपरिक बुनाई व्यवसायों पर पड़ा।ब्रिटेन से आयातित कच्चे माल व उससे बने कपड़ों की भरमार ने बुनकरों के पेशे को सर्वाधिक नकारात्मक रूप से प्रभावित किया जिससे कोरी बुनकरों के श्रम विभाजन और रोजगार में परिवर्तन देखा गया।भारत में औद्योगीकरण के पश्चात कोरी बुनकर नई प्रौद्योगिकियों के समक्ष कमजोर पड़े जिसका उनकी आर्थिक व सामाजिक दशा पर प्रभाव पड़ा। साथ ही उस जाति का श्रम विभाजन भी अछूता न रहा। 19वी सदी के उत्तरार्ध में स्वचालित करघों के आने से कारखाना व्यवस्था का उदय होता हुआ देखा गया। जिससे महिलायें बुनाई क्षेत्र से वंचित होने लगी जिसके कारण रोजगार में लैंगिक विभाजन बढ़ता हुआ देखा गया क्योंकि पहले उत्पादन की इकाई घर में स्थापित होती थी और महिलाओं का उत्पादन में सहयोग देखने को मिलता था। परंतु कारखानों के उदय से महिलाएं रोजगार से दूर होती चली गई और वे अन्य रोजगारों यथा दाई के कार्य , नौकरानी आदि कामों को करने लगी । इन कामों को उच्च वर्गों द्वारा हीनता की दृष्टि से देखा जाता था जिससे उनकी स्थिति और गिरती हुई चली गई। नई तकनीकों के आगमन ने कोरी बुनकरों की आर्थिक गतिविधियों को लगभग ठप्प कर दिया और वे अन्य रोजगारों की ओर उन्मुख हुए । यह सर्वविदित है कि आर्थिक विकास सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है इसीलिए औद्योगिकीकरण के कारण कोरियो की सामाजिक स्थिति भी गिरती हुई चली गई ।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कोरी जाति भारतीय सामाजिक संरचना में एक ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण, किन्तु वंचित समुदाय रही है। इसकी पहचान समय और क्षेत्र के अनुसार बदलती रही है ,कहीं यह स्वयं को कबीर या कोल वंशज के रूप में देखती है, तो कहीं इसे चमार समुदाय से जोड़कर देखा गया। परंपरागत रूप से बुनकर का कार्य करने वाले कोरी समाज ने 1857 के विद्रोह से लेकर स्वदेशी आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम और दलित आंदोलनों तक सक्रिय भूमिका निभाई। झलकारी बाई, बाबू जगजीवन राम, बाबादीन कोरी जैसे व्यक्तित्व इसके गौरवपूर्ण इतिहास के प्रतीक हैं।

औद्योगीकरण और मशीन आधारित उत्पादन ने इनके पारंपरिक पेशे को गहरा आघात पहुँचाया, जिससे आर्थिक स्थिति बिगड़ी और आजीविका के लिए इन्हें अन्य व्यवसायों की ओर मुड़ना पड़ा। सामाजिक दृष्टि से यह समुदाय जातिगत भेदभाव, हीन दृष्टि और कुप्रथाओं का शिकार रहा, लेकिन समय-समय पर बने सामाजिक संगठनों और सुधार आंदोलनों ने शिक्षा, एकता और सामाजिक उत्थान की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल की।

आज कोरी समाज परंपरा और आधुनिकता के बीच खड़ा है — एक ओर इसकी जड़ें गहरे जातिगत ढाँचे में हैं, तो दूसरी ओर नई पीढ़ी शिक्षा, वर्ग और योग्यता आधारित पहचान की ओर अग्रसर है। इसके विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षा, आर्थिक अवसर, सामाजिक समानता और संगठनात्मक एकजुटता को प्राथमिकता दी जाए, ताकि यह समुदाय अपने गौरवशाली इतिहास के साथ भविष्य में भी सशक्त रूप से आगे बढ़ सके।

[4] Gould,Harold.A, Jajmani System of North India,article(1964)

Bibliography -

1. Crooke, W. The Tribes and Castes of the North-Western Provinces and Oudh. 1896.
2. Russell, R. V. and Rae Bahadur Hira Lall The Tribes and Castes of the Central Provinces of India., 1916.
3. Nesfield, J.C. Brief Review of the Caste System of the North-Western Provinces and Oudh., 1885.
4. Molund, Stefan. First We Are People: The Koris of Kanpur Between Caste and Class. Stockholm: Stockholm Studies in Social Anthropology, 1988.
5. Rai, Santosh Kumar. Weaving Hierarchies Handloom Weavers in Early Twentieth Century United Provinces, Delhi: Primus Books, 2021
6. The Bijak of Kabir . Translated into English by the Rev.Ahmad Shah,1917
7. Risley,Sir H.H. The Peoples of India, New Edition,1915.
8. Harit, B.L. , Veerangana Jhalkari. Delhi: Hind Prakashan,1995.
9. Roy, Tirthankar. Economic History And Modern India: Redefining the Link, Journal of Economic Presprective, Volume 16, Number 3-Summer 2002.
10. Narayan, Badri. Women Heroes and Dalit Assertion In North India
11. Culture, Identity and Politics, Delhi, Sage Publication, 2006.
12. Rawat, Ramnarayan S. Reconsidering Untouchability Chamars and Dalit History in North India' , Indian University Press,2010